विविधता में एकता या 'एक में अनेक'

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» विविधता में एकता – परिचय

» सभी के लिए भोजन – साझा अनाज, अनगिनत व्यंजन

» वस्त्र एवं परिधान – साड़ी का उदाहरण

» साहित्य में एकता – पंचतंत्र की कहानियाँ

» महाकाव्यों का विस्तार – रामायण और महाभारत के लोक-रूपांतरण

» विविधता ही समृद्धि है – निष्कर्ष

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. विंसेंट स्मिथ के कथन 'भारत विविधता में एकता प्रदर्शित करता है' का क्या अर्थ है? उदाहरण सहित समझाओ।

› भारत में भाषा, भोजन, वस्त्र, धर्म – हर चीज़ में भारी विविधता है
› फिर भी सभी भारतीय एक साझा इतिहास, साझा मूल्यों और साझा पहचान से जुड़े हैं
› इसी साझा धागे को 'अंतर्निहित एकता' कहा जाता है

उत्तर – इसका अर्थ है कि भारत की सतही विविधता के नीचे एक गहरी साझा एकता छिपी है, जो देश को जोड़े रखती है।

उदाहरण 2. 'मुख्य अनाज' किसे कहते हैं और यह 'विविधता में एकता' को कैसे दर्शाते हैं?

› मुख्य अनाज वे अनाज हैं जो पूरे देश में व्यापक रूप से खाए जाते हैं – जैसे चावल, गेहूँ, बाजरा
› हर क्षेत्र इन्हीं अनाजों से अपने-अपने ढंग से अलग-अलग व्यंजन बनाता है
› इसलिए मूल सामग्री एक (एकता) होते हुए भी व्यंजन अनेक (विविधता) बन जाते हैं

उत्तर – मुख्य अनाज वे साझा अनाज हैं जो पूरे भारत में खाए जाते हैं, और अलग-अलग क्षेत्र इन्हीं से अलग-अलग व्यंजन बनाकर विविधता दिखाते हैं, यही 'विविधता में एकता' है।

उदाहरण 3. साड़ी का उदाहरण 'विविधता में एकता' को कैसे दर्शाता है? स्पष्ट करो।

› साड़ी एक ही तरह का परिधान है जो पूरे भारत में पहना जाता है (एकता)
› इसकी सामग्री (कपास, रेशम), डिज़ाइन, बुनाई और पहनने का तरीका क्षेत्र-दर-क्षेत्र अलग है (विविधता)
› फिर भी अंततः यह एक ही परिधान – 'साड़ी' – के रूप में पहचाना जाता है

उत्तर – साड़ी एक ही परिधान (एकता) है, पर इसके सैकड़ों डिज़ाइन और पहनने के तरीके (विविधता) इसे 'विविधता में एकता' का सुंदर उदाहरण बनाते हैं।

उदाहरण 4. पंचतंत्र का उदाहरण 'एक का अनेक में बदलना' कैसे दर्शाता है? समझाओ।

› पंचतंत्र का मूल संस्कृत पाठ एक ही स्रोत से शुरू हुआ
› समय के साथ यह 50 से ज़्यादा भाषाओं में 200 से ज़्यादा रूपांतरणों में फैल गया
› फिर भी हर रूपांतरण में मूल कहानियों का संदेश और शिक्षा जीवित है

उत्तर – पंचतंत्र एक ही मूल स्रोत से शुरू होकर अनेक भाषाओं और रूपों में फैल गया, पर उसका मूल संदेश एक ही रहा – यही एकता में विविधता का उदाहरण है।

उदाहरण 5. महाभारत के तमिलनाडु में मिले 100+ लोक-रूपांतरणों का उदाहरण 'विविधता में एकता' को कैसे दर्शाता है?

› महाभारत का एक मूल संस्कृत महाकाव्य पूरे भारत में जाना जाता है (एकता)
› फिर भी अलग-अलग क्षेत्रों और समुदायों ने अपनी खुद की लोक-कथाएँ विकसित कीं (विविधता)
› यह दिखाता है कि एक साझा कथा स्थानीय रंग लेकर भी अपनी पहचान बनाए रखती है

उत्तर – महाभारत एक ही मूल कथा (एकता) है, पर तमिलनाडु सहित हर क्षेत्र में इसके अपने लोक-रूपांतरण (विविधता) मिलते हैं – यही विविधता में एकता है।

उदाहरण 6. टैगोर और श्री अरविंद के कथनों के आधार पर बताओ कि 'विविधता में एकता' भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

› टैगोर चाहते थे कि हम अनेकता में छिपी एकता का आनंद कभी न खोएँ
› श्री अरविंद कहते हैं कि यह भाव भारत के स्वभाव और अस्तित्व के लिए ज़रूरी है
› दोनों विचारक विविधता को समस्या नहीं बल्कि भारत की पहचान का आधार मानते हैं

उत्तर – टैगोर और श्री अरविंद दोनों के अनुसार 'विविधता में एकता' भारत के स्वभाव और अस्तित्व की नींव है, इसलिए यह देश को कमज़ोर नहीं बल्कि समृद्ध बनाती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• 'भारत के लोग परियोजना' के आँकड़े (4,635 समुदाय, 325 भाषाएँ, 25 लिपियाँ) याद रखो – यह सीधे पूछे जाते हैं।
• भारत के मुख्य अनाजों के नाम सूची बनाकर याद रखो – यह प्रश्न सीधे पूछा जाता है।
• साड़ी के कम से कम तीन प्रकारों के नाम (बनारसी, कांजीवरम, पैठनी) याद रखो।
• पंचतंत्र के आँकड़े (2,200 वर्ष पुराना, 50+ भाषाएँ) ठीक से याद रखो, ये सीधे पूछे जाते हैं।
• रामायण और महाभारत के मुख्य पात्रों के नाम और उनकी भूमिका स्पष्ट रूप से याद रखो – सीधे पूछे जाते हैं।
• निबंधात्मक प्रश्नों में टैगोर और श्री अरविंद के कथनों का उल्लेख करना अतिरिक्त अंक दिलाता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› भारत – 1.4 अरब+ लोग, 325 भाषाएँ, 25 लिपियाँ; विविधता में एकता = सतही अंतर के नीचे साझा धागा।
› मुख्य अनाज (चावल, गेहूँ, बाजरा आदि) + साझा मसाले = एकता; अलग-अलग व्यंजन = विविधता।
› साड़ी = पूरे भारत में साझा परिधान (एकता); डिज़ाइन, बुनाई, पहनने का तरीका = विविधता।
› पंचतंत्र – मूल संस्कृत, 2,200 वर्ष पुराना, 50+ भाषाओं में 200+ रूपांतरण।
› रामायण-महाभारत – मूल संस्कृत महाकाव्य; सैकड़ों क्षेत्रीय व जनजातीय लोक-रूपांतरण मौजूद।
› विविधता विभाजित नहीं करती, समृद्ध करती है – यही 'विविधता में एकता' का मूल संदेश है।